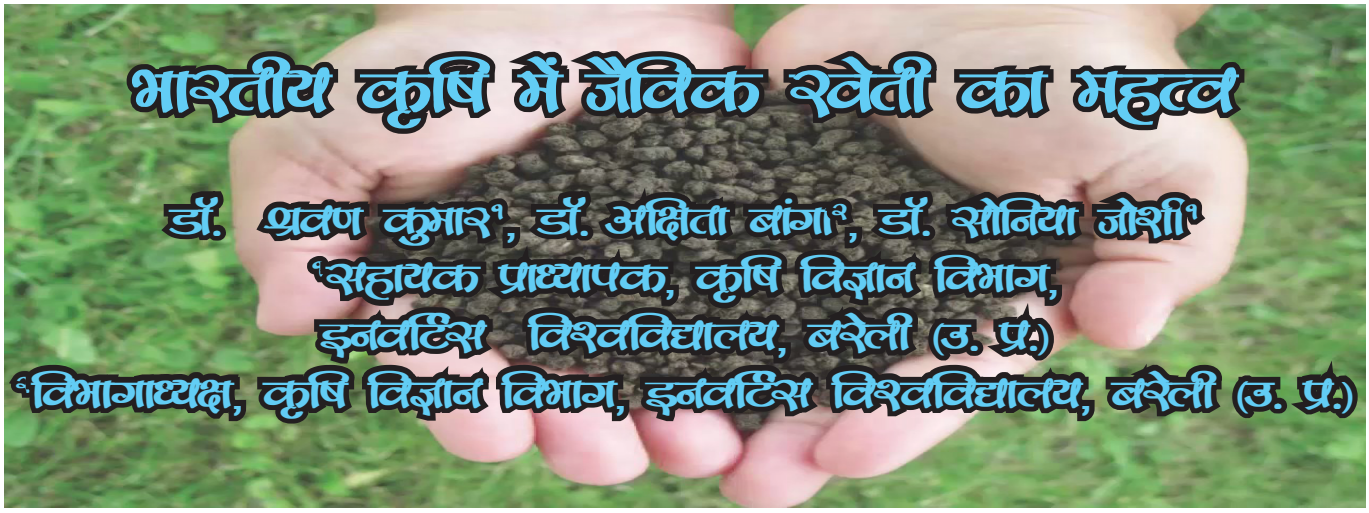

भारतीय कृषि में जैविक खेती का महत्व

डॉ. श्रवण कुमार[1], डॉ. अक्षिता बांगा[3], डॉ. सोनिया जोशी[1]
[1]सहायक प्राध्यापक, कृषि विज्ञान विभाग,
इनवर्टिस विश्वविद्यालय, बरेली (उ. प्र.)
[2]विभागाध्यक्ष, कृषि विज्ञान विभाग, इनवर्टिस विश्वविद्यालय, बरेली (उ. प्र.)

जैविक खेती, खेती की पारम्परिक पध्दति है जिसे अपनाकर भूमि की दशा सुधार करके उसे पुनर्जीवित करने का स्वच्छ एंव रसायनिक मुक्त तरीका है। इस पद्धिति से खेती करने के लिए, बिना रासायनिक खादों, सिंथेटिक कीटनाशकों, वृद्धि नियंत्रक, तथा प्रतिजैविक पदार्थो का उपयोग प्रतिबंधित होता। इन रसायनिक पदार्थो के स्थान पर किसान स्थानीय उपलब्धता के आधार पर फसलों द्वारा छोड़े गए बायोमास का उपयोग करते हैं, जो भूमि की गुणवत्ता बढ़ाने के साथ–साथ उर्वरता बढ़ाने का भी कार्य करता है।

आर्गेनिक वर्ल्ड रिपोर्ट 2021 के अनुसार वर्ष 2019 में विश्व का 72.3 मिलियन हेक्टयर क्षेत्र जैविक खेती हेतु उपयोग में लिया गया जिसमें एशिया का 5.1 मिलियन हेक्टयर क्षेत्र भी शामिल है, भारत में भी पिछले कुछ वर्षो में जैविक खेती से वृद्धि हुई है. इसका मुख्य कारण अधिक रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों से होने वाला दुष्प्रभाव हैं, जिसने भारत सरकार को इस दिशा में विचार करने के लिए प्रेरित किया।

अतः सरकार जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु किसानों को प्रोत्साहित कर रही है. जिसके परिणाम स्वरूप 2019 में जैविक खेती का क्षेत्र बढ़कर 22,99,222 हेक्टयर हो गया है. हालांकि, आज भी यह परंपरागत कृषि क्षेत्र की तुलना का 1.3 प्रतिशत है. इसका मुख्य कारण बढ़ती हुई जनसंख्या की आपूर्ति के लिए परंपरागत खेती की दक्षता है, जोकि उसके द्वारा प्राप्त उत्पाद की मांग को बढ़ावा दे रहे हैंद्य किन्तु इन उत्पादों अथवा फसलों के उत्पादन में उपयोग होने वाले रासायनिक खाद एवं कीटनाशक की बढ़ती मात्रा दूरगामी दुष्प्रभाव का संकेत है, जिन्हें शुरुआत में नजरअंदाज किया गया।

जैविक खेती प्रचलन का कारण

जैविक खेती का बढ़ाता प्रचलन मुख्यतः उपभोक्ता की मांग पर आधारित होता है. उपभोक्ता की मांग मुख्यतः खाद्य उत्पाद की गुणवत्ता पर निर्भर करती है. पारम्परिक खेती में बढ़ते रसायनों का उपयोग तथा उनके कुप्रभाव, दूरगामी स्तर पर उपभोक्ता में अविश्वास का कारण बन रहे हैंद्य इस आधार पर इनके कुछ निम्न कारण संभव है.

1. अधिक मात्रा में रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों का उपयोग करना.
2. बढ़ते रसायनो के कारण मिटटी, जल तथा वायु दूषित होती जा रही है.
3. मानव स्वास्थ पर इसका विपरीत प्रभाव हो रहा है.

जैविक खेती का महत्त्व

पारम्परिक खेती से होने वाले कुप्रभाव, जैविक खेती की बढ़ती मांग का मुख्य कारण हैं. इन बातों

का ध्यान रखते हुए भारत सरकार भी जैविक खेती को प्रोत्साहित कर रही है. अतः भारत में जैविक खेती का उत्पादन पूर्व वर्षों की तुलना में वर्ष 2019–20 में बढ़कर 2.75 मिलियन मैट्रिक टन हो गया है।

जैविक खेती से उत्पन्न खाद्य उत्पादों की विदेशों में बढ़ती मांग भी इसके महत्त्व को प्रदर्शित करती है. वर्ष 2019–20 में भारत से जैविक खाद्य उत्पाद का कुल निर्यात 6.39 लाख मैट्रिक टन रहा, जिसका मूल्य लगभग 4686 करोड़ रूपए अनुमानित किया गया है। यह उत्पाद मुख्यतः ऑस्ट्रेलिया, जापान, कनाडा, न्यूजीलैंड, स्विट्जरलैंड, इजराइल, संयुक्त अरब अमीरात तथा वियतनाम जैसे देशो में निर्यात हो रहे हैं. इनके आलावा भी जैविक खेती की महत्ता के कुछ प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं।

- जैविक खाद्य उत्पादन की जीवन अवधी का अधिक होनाद्य
- जैविक फसलों की परिपक्वता में अधिक समय होता है जिससे वे अधिक पोषण ले पाते हैं एवं स्वादिष्ट भी होते हैंद्य
- जैविक फसलों का प्रचलन जीव विविधता को संतुलित रखने के साथ भूमि की उर्वरता को भी बनाए रखता है।

रासायनिक खादों का उपयोग न करने से पारम्परिक खेती में होने वाला ऊर्जा क्षय भी लगभग 25–30 प्रतिशत तक घट जाता है।

जैविक खेती में बाधाएं

- जैविक खाद्य का मूल्य रासायनिक खादों की तुलना में अधिक होने से छोटे एवं सीमान्त किसानो के लिए इनका उपयोग करना कठिन होता है.
- जैविक खादों की उपलब्धता में कमी का होना भी एक कारण है.
- बाजार में उपलब्ध बीज का सामान्यतः उपचारित होने से, पूर्णतः जैविक खेती करना कठिन है.
- जैविक फसलों की परिपक्वता में समय लगने से इनसे प्राप्त उत्पादों की कीमत अधिक होती है, जिससे निम्न वर्ग तक इन उत्पादों का पहुंचना मुश्किल होता है।